सरस्वती विद्या मन्दिर आनी जिला कुल्लू, हि.प्र.

सरस्वती विद्या मन्दिर आनी

बन्धुवर / भगिनी,

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् जब विदेशी शिक्षा प्रणाली को हमने अपना लिया, उसी क्षण वर्तमान स्थिति का बीजारोपण हो चुका था। वर्तमान शिक्षा प्रणाली के स्वरूप स्वार्थी एवं भ्रष्ट नागरिक बनकर विद्यालय से निकल रहे हैं। धर्म, संस्कृति एवं भारतीय जीवन मूल्यों के प्रति उसके मन में विद्रोह की भावना भड़कती दिखाई देती है और बालक पूर्ण रूप से अपने माता- पिता समाज एवं देश के कट जाता है।हमारे बालक का धनोपार्जन कर आधुनिक सुख सुविधाएं प्राप्त करना ही उसके जीवन का लक्ष्य है कहीं पैसे के लिए स्वार्थी एवं भ्रष्ट मानसिकता का भाव तो नहीं आ रहा इन सब कुरीतियों से बचाने के लिए हमें अपने बच्चों के अच्छे विद्यालय में प्रवेश दिलाकर उच्च शिक्षा ग्रहण करने के बाद शारीरिक, मानसिक, प्राणिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से परिपूर्ण हो अपने माता-पिता, देश धर्म एवं संस्कृति से जुड़ा रहे ऐसे बालकों के लिए हमें अध्यापकों का सहयोग करना चाहिए।भारतीय जीवन मूल्यों पर आधारित शिक्षा देने में सरस्वती विद्या मन्दिर, आनी , गत 34वर्षों से प्रगति पथ पर निरन्तर अग्रसर है। इसका श्रेय विद्या भारती एवं हिमाचल शिक्षा समिति के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के पूर्ण सहयोग, अभिभावक एवं विद्या ग्रहण कर रहे छात्रों के निरन्तर प्रयत्नों को जाता है।

विद्या भारतीः

देश की सबसे बड़ी सम्पति उस देश के नागरिक है। आज का बालक कल का नागरिक है हम देश को जिस रूप में देखना चाहते हैं उसके लिए आवश्यक है कि हम बालक को वैसा हो बनाएं विद्या भारती के अन्तर्गत चलने वाले सभी विद्यालय एक ऐसी संस्था है जहां बालक के अन्दर शिक्षा के साथ-साथ संस्कार डाले जाते हैं अध्यापक इस संस्कार शाला की आत्मा है इस उद्देश्य हेतु विद्या भारती का कार्य 1977 में प्रारम्भ हुआ। लगभग 25 हजार शैक्षिक संस्थाओं को विद्या भारती ने 11 क्षेत्रों में बांटा है। विद्या भारती विभिन्न प्रकार की शैक्षिक शोध-पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन करती है।

हिमाचल शिक्षा समितिः

हिमाचल शिक्षा समिति के रूप में 1980 में पांवटा साहिब में एक सरस्वती विद्या मन्दिर प्रारम्भ होने के साथ शुरू हुआ। उसके उपरान्त हिमाचल शिक्षा समिति से कार्यकर्ता जुड़ते गए। अनेक बाधाएं आने के बाद भी विद्यालय बढ़ते गए और इन्हीं कार्यकर्ताओं के परिश्रम से आज यह संख्या बढ़कर 430 तक पहुंच गई है। हिमाचल प्रदेश में ये विद्यालय ग्रामीण जनजातीय एवं दुर्गम क्षेत्रों में चल रहे हैं। शिमला जिला के डोडरा क्वार में भी विद्यालय प्रारम्भ किया गया और सफलतम तरीके से चल रहा है। जनजातीय क्षेत्रों में कुल 12 विद्या मन्दिर चल रहे हैं। हिमाचल के सुदूर क्षेत्र चम्बा जिले का पांगी हो या लाहौल- स्पिति का केलांग तथा उदयपुर जो वर्ष के छ: महीने देश के अन्य भागों से कटा रहता है, में भी कार्य चल रहा है। हिमाचल शिक्षा समिति सम्पूर्ण प्रदेश में अनुशासित तथा संस्कार रूपी ज्ञान का प्रकाश निरन्तर देने में अग्रसर है।

परिचय

विद्या भारती

हिन्दू दर्शन संस्कृति व राष्ट्रीयता पर आधारित संस्कारमय शिक्षा देना, न कि केवल डिग्रीधारक अर्ध अंग्रेज तैयार करना ही एकमात्र लक्ष्य है। जिसे देशभर में साकार कर रहे हैं,लगभग 35000 विद्यालय, 40 लाख छात्र- छात्राएं तथा 200,000 आचार्य / दीदी

हिमाचल शिक्षा समिति

वर्ष 1980 में स्थापित, प्रदेश भर में कार्य विस्तार की योजना से लगभग सभी 12 जिलों में दुर्गम से दुर्गम स्थानों तक विद्यालय पहुंच चुके हैं। जैसे किन्नौर जिला के सांगला (समुद्रतल से लगभग 9000 फीट ऊँचाई पर)। चम्बा जिले के दूरस्थ तहसील पांगी (किलाइ) लाहौल जिला में केलांग व जालमा। प्रदेश भर में 350 शाखाएं जिनमें 2 आवासीय है। 35 हजार विद्यार्थी एवं 2500 अध्यापक।

पर्वत राज हिमाचल की गोद में समुद्रतल से 4000 फीट की ऊँचाई पर दुर्गा माता की पावन स्थली आनी नगर के मध्य में यह विद्यालय परिसर स्थित है। इस विद्यालय परिसर में 30 छोटे-बड़े कमरे है। क्रीडा स्थल विद्यालय के बिल्कुल समीप है। विद्यालय में विज्ञान की प्रयोगशालाएं व पुस्तकालय भी उपलब्ध है। ज्ञानार्जन की दृष्टि से विद्यालय का वातावरण बिल्कुल अनुकूल है।

विद्यालय का प्रारम्भ

विद्यालय का शुभारम्भ 1मई 1987 में एक किराए के भवन में आनी में हिमाचल शिक्षा समिति द्वारा किया गया। वर्ष 2000 में विद्यालय निर्माण हेतु भूमि ली गई और 2001 में निर्माण कार्य आरम्भ हुआ।

उद्देश्य

ऐसे युवक युवतियों का निर्माण करना जो हिन्दुत्वनिष्ठ, राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत, शारीरिक,प्राणिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्ण विकसित हों और जीवन की वर्तमान चुनौतियों का सामना सफलतापूर्वक कर सकें। जो ग्रामीण, वनवासी, निर्धन, पिछड़े व दीन-दुखियों को, सामाजिक कुरीतियों, शोषण व अन्याय से मुक्ति दिलाकर राष्ट्र को समरस, सुसम्पन्न एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए समर्पित हो।

विद्यालय भवन

विद्यालय के अपने भवन में 30 कमरे व विशाल कक्ष बनकर तैयार है जिसमें शिशु से 10th कक्षा तक बैठने के लिए पृथक-पृथक सुन्दर कक्ष है। सर्व सुविधायुक्त प्रयोगशालाएं, पुस्तकालय एवं वाचनालय है। इनके अतिरिक्त आचार्य/आचार्या कक्ष, संगणक कक्ष भी विद्यालय परिसर में है।

प्रयोगशालाएं हिमाचल स्कूल शिक्षा बोर्ड धर्मशाला द्वारा निर्धारित मानदण्डों के अनुरूप 10th तक को कक्षाओं में विज्ञान स्तर के लिए प्रयोगशलाएं है । जिनमें आवश्यक उपकरण, माडल चार्ट्स एवं सलाइड्स आदि का प्रयोग होता है। शिक्षा को वर्तमान रूप देने और शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए Digital Class का प्रावधान है।

कम्प्यूटर

विद्यालय में अलग से एक कम्प्यूटर विभाग है। जिसमें उपयुक्त संख्या में कम्प्यूटर एवं योग्य व अनुभवी शिक्षकों का मार्गदर्शन उपलब्ध है। विद्यालय में प्रथम कक्षा से कम्प्यूटर शिक्षा अनिवार्य है। प्रथम से कम्प्यूटर शिक्षा उपलब्ध है। विद्यार्थियों को प्रयोगशाला के अन्दर INTERNET की सुविधा उपलब्ध है। पूरा विद्यालय परिसर Wifi से परिपूर्ण है

पुस्तकालय एवं वाचनालय

पाठ्यक्रम के अतिरिक्त भी विद्यार्थियों में स्वाध्याय की प्रवृति जागृत हो, तथा देश-विदेश में प्रतिदिन घटित

हो रहे घटनाक्रम की उन्हें जानकारी हो इस हेतु विभिन्न तरह की पत्र-पत्रिकाओं तथा साहित्य से सुसज्जित पुस्तकालय व वाचनालय की विद्यालय परिसर में व्यवस्था की गई है।

शिक्षा सत्र

विद्यालय का शिक्षा सत्र हिमाचल शिक्षा समिति तथा हिमाचल प्रदेश राज्य विभाग के नियमानुसार तय किया जाता है जो कि निम्नानुसार है:-

शरदावकाश । जनवरी से 11 फरवरी

ग्रीष्मावकाश - सरकारी विद्यालयों के अवकाश अनुसार शेष अवकाश हिमाचल शिक्षा समिति के शैक्षणिक पंचांग के अनुसार होते है।

परिक्षाएं

विद्यालय की तृतीय,पंचम, अष्टम् तथा दशम् की परिक्षाएं हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड तथा संस्कृति ज्ञान परीक्षा, विद्या भारती द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार ली जाती है।विद्यालय की अंतरिम परीक्षाओं की पूरी सूचना समय-समय पर अभिभावकों को दी जाती है।

सह शिक्षण-क्रिया-कलाप

"स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का वास होता है।"विद्यालय में खेलकूद एवं शारीरिक कार्यक्रमों पर विशेष बल दिया जाता है। छात्रों को विभिन्न खेलों में भाग लेना अनिवार्य है।प्रातः काल योगाभ्यास, आसन प्राणायाम तथा सायंकाल कब्बडी, खो-खो बालीवाल, हॉकी एवं नियुद्ध आदि में क्षमता अनुसार शिक्षा दी जाती है। इस हेतू कुशल प्रशिक्षकों तथा उपकरणों को पूर्ण व्यवस्था है। अलग से व्यायामशाला को स्थापना की भी योजना है

छात्र भारती/छात्र संसद

लोकतांत्रिक कार्यप्रणाली के व्यवहारिक ज्ञान हेतु एक निर्वाचित छात्र परिषद का गठन किया जाता है। जिससे छात्रों में नेतृत्व क्षमता, दायित्व निर्वाह एवं समस्याओं का सामना करने को प्रवृति का विकास होता है। तथा विद्यालय संबंधी नीतिगत

विषयों में इनकी राय ली जाती है।

अध्यापन

विद्यालय हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त सम्बद्ध है।विद्यालय में कक्षा शिशु से 10th तक अध्यापन की व्यवस्था है।प्रत्येक कक्षा में अधिकतम 40 छात्र प्रवेश पा सकते है तथा प्रत्येक 20 विद्यार्थियों पर एक अध्यापक की व्यवस्था है।अध्यापक न्यूनतम बी.ए.बी. एड. तथा अपने विषय के विशेपुन नियुक्त किए जाते हैं।जिनकी नियुक्ति एक विशेष बोर्ड निर्धारित मानदण्डों के योग्यता को ध्यान में रखते हुए साक्षात्कार द्वारा की जाती है। पाठ्यक्रम के अतिरिक्त विद्या भारती द्वारा निर्धारित संस्कृत, संगीत, नैतिक शिक्षा तथा योग व शारीरिक शिक्षा अनिवार्य है। प्रश्न मंच, सामान्य ज्ञान परीक्षा, संस्कृति ज्ञान परीक्षा तथा महापुरुषों की जीवनियां इत्यादि भी पाठ्यक्रम का अंग है।

प्रवेश

प्रतिवर्ष समान्यतः कक्षा शिशु, छठी, नवम्, ग में ही प्रवेश दिया जाता है। स्थान रिक्त होने पर ही अन्य कक्षाओं में प्रवेश संभव है।

नियम

1. प्रवेश हेतु विद्यालय परीक्षा लेगा, जिसमें उत्तीर्ण होने के बाद पुनः साक्षात्कार हेतु बुलाया जाएगा।
2. प्रवेश परीक्षा विद्यालय परिसर में होगी।
3. विवरणिका मिलने का अर्ध प्रवेश की गारंटी कदापि नहीं है।
4. चयन समिति का निर्णय अंतिम तथा मान्य होगा।

विद्यालय वेश

भैयाः सोमवार से बुधवार ग्रे पैंट, सफेद कमीज, चमड़े के काले जूते (काले फीते), ग्रे जुराब, मैरून ब्लेजर।वीरवार से शनिवार का वेष ट्रेक, सफेद फलीट, सफेद जुराबें बहनें सोमवार से बुधवार स्टील ग्रे कमीज, सफेद सलवार, सफेद दुप्पटा, मैरून स्वेटर,काले जूते व ग्रे जुराबें।वीरवार से शनिवार का वेष ट्रेक, सफेद फलोट, जुराबें।

पूरे वर्ष का शुल्क प्रवेश के समय इकट्ठा भी जमा कराया जा सकता है। शुल्क भेजते समय प्रधानाचार्य,

सरस्वती विद्या मन्दिर आनी के नाम से रेखांकित ड्राफ्ट भेजें। विद्या भारती को एस.जी.एफ. आई. से मान्यता प्राप्त है।

शैक्षणिक गुणवता

बोर्ड परिणामः

किसी भी शिक्षण संस्थान की शैक्षणिक गुणवत्ता विद्यालय द्वारा दर्शाए गए सार्वजनिक परीक्षाओं के परिणाम से अभिव्यक्त होती है। इस दृष्टि से विद्यालय ने अब तक हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड की अष्टम एवं दशम् की परीक्षाओं में शत-प्रतिशत पास, विशेष योग्यता सूची, अधिकतम अंको के आधार पर वर्षानुवर्ष नए कीर्तिमान स्थापित किए है।

दशम्ः

1. वर्ष 2013 में हितेश्वर शर्मा ने 622/700 अंक स्थान प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया।
2. वर्ष 2014 में नीतिका जम्वाल ने 666/700 अंक स्थान प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया।
3. वर्ष 2015 में अनुजा ठाकुरने 671/700 अंक स्थान प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया।
4. वर्ष 2016 में युक्ता ठाकुर ने 682/700 अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान किया व हिमाचल बोर्ड धर्मशाला में आठवा स्थान प्राप्त किया
5. वर्ष 2017 में रोहित कटोच 653/700 अंक स्थान प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया।
6. वर्ष 2018 में अक्षिता ठाकुर व कामिनी ठाकुर ने 664/700 अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया।
7. वर्ष 2019 में हरीयंश सुमन ने 665/700 अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया।
8. वर्ष 2020 में मीनाक्षी ठाकुर ने 667/700 अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

9 वर्ष 2021 में नेहा वर्मा ने 696/700 अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

10 वर्ष 2022 में भवानी ठाकुर ने 697/700 अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

11 वर्ष 2022 में उज्ज्वल सुमन ने 697/700 अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

छात्रवृतिया

1. हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा विद्यालय के 5 विद्यार्थियों को 10,000 रूपए, प्रति छात्र, छात्रवृत्तियां प्रदान की गई।
2. डॉ.बी. आर. अम्बेडकर छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत छात्रों को छात्रवृत्ति मिली व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश :

व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश :

विद्यालय की शैक्षणिक गुणवत्ता के मापन का दूसरा प्रमुख मापदण्ड जीवनोपयोगी विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में विद्यालय द्वारा प्रेषित छात्रों की संख्या है। इस दृष्टि से विद्यालय ने पिछले कुछ वर्षों में अपनी उपलब्धियों से गौरव अर्जित किया है।विद्यालय के छात्र जुनियर इंजीनियरिंग ट्रेनिंग, वी. टैक, इंजीनियरिंग, बी.डी.एम.एम.ची.वी. एस. आदि व्यावसायिक परीक्षाओं में प्रवेश के लिए चयनित किए गए।

Selection to various universities through campus entrance test during study, Special focus on the topic related to engineering and PMT. Selection to inspire game organized

विद्यालय प्रवेश एवम् अन्य नियम:

1. कक्षा अरुण में प्रवेश हेतु विद्यार्थी का जन्म प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना अनिवार्य है। शेष कक्षाओं में प्रवेश हेतु विद्यालय त्याग प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना अनिवार्य है।
2. विद्यालय प्रात 9:30 बजे प्रारम्भ एवं अवकाश सांय 4:०० पर होगा। शिशु व बाल कक्षा का अवकाश दोपहर 1:15 बजे होगा।
3. बालक से मिलने अभिभावक कक्षा मे न जाकर कार्यालय में सम्पर्क करें।
4. प्रवेश के समय सही जानकारी प्रवेश फार्म पर अभिभावक द्वारा भरी जानी अपेक्षित है। किसी भी त्रुटि के लिए

विद्यालय उत्तरदायी नहीं होगा।

5. किसी भी परीक्षा (मासिक, नवमासिक, वार्षिक) की तिथि में परिवर्तन नहीं किया जाएगा।

6. अभिभावक हस्ताक्षर युक्त प्रार्थना पत्र पर ही अवकाश देय होगा व अभिभावक द्वारा दूरभाष पर अवकाश की सूचनादेना अनिवार्य है। अर्धावकाश लेने के लिए अभिभावक को स्वयं विद्यालय जाना होगा दूरभाष द्वारा सूचना देने पर बालक को विद्यालय से नहीं भेजा जाएगा।

7. मासिक शुल्क 1 से 10 तारीख तक प्रातः 9:30 बजे से 2:00 बजे तक ही लिया जाएगा तत्पश्चात विद्यालय द्वारा निर्धारित माह की 20 दिनांक तक 10रुपए 30दिनांक तक 20 रुपए जमा नहीं होते हैं ऐसी स्थिति में अगले महीने दो माह के शुल्क सहित 50 रुपए अतिरिक्त विलम्ब के साथ शुल्क लिया जाएगा।

8,द्वारा निश्यिाम देश में किसी तरह की छूट नहीं होगी अतिआदेशात्यनीक न होने की स्थिति में 10 रुपए प्रतिदिन के हिसाब से दस्ता है।

9. स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन कहता है। इसलिए सभी अभिभावकको अपने तक के लिए देन विद्यालय सेना आवश्यक है और दिल में सभी भोजन होकर भोजन मंत्र बोलने के परचा ही प्रान करेंगे।

10. किसी भी प्रकार की अनुशसान हीनताअशोभनीय व्यवहारआदि पर छात्र का नाम भी काटा जा सकता है।

11. विद्यालय लैब वन्दना कक्ष कम्प्यूटर लैब आदि को किसी भी प्रकार की क्षति के लिए की क्षति पहुंचाने वाले छात्र को स्वयं उसकी पूर्ति करनी होगी।

12. समय पालन, अनुशासन एवं शिष्टाचारका व्यवहार सभी से अपेक्षित है।

13. अभिभावक छात्रों की पूर्ण जानकारी के लिए मास में दो बार प्रधानाचार्य अध्यापकों से विद्यालय में अवश्य सम्पर्क करें।

14. विद्यालय परिसर में सभी आपस में भैया, दीदी शब्द से सम्बोधन करेंगे।

15. विद्यालय में 12 महीनों का शुल्क जमा करना आवश्यक है इसलिए हर वर्ष नवम्बर और दिसम्बर माह में दो-दो महीने का शुल्क इकटठा लिया जायेगा।

16. विद्यालय के सभी अधिकारों व नियम परिवर्तन में विद्यालय प्रशासन का निर्णय अंतिम होगा।

17. छात्र के पास कोई भी कीमती सामान जैसे मोबाइल फ़ोन,अंगूठी, नकदी दिलाने की अनुमति नहीं है। यदि किसी भी विद्याथी के पास कोई भी सामान पाया जाता है तो विद्यालय प्रशासन तुरन्त उसे अपने नियंत्रण में ले लेगा और निर्धारित दण्ड जमा करने पर ही उसे वापस किया जाएगा। विद्यार्थी यदि एक महीने के अन्दर आर्थिक दण्ड देकर समान वापिस नही लेता है ऐसी स्थिति में विद्यालय प्रशासन सामान को जब्त कर लेगा।

18. लगातार 7 दिन अवकाश पर रहने पर नाम काट दिया जाएगा पुनः प्रवेश 100 रुपए जमा करने पर ही दिया जाएगा।

19. अति निर्धन परिवार से सम्बन्ध रखने वाले विद्यार्थियों के लिए भी शुल्क में रियायत का प्रावधान है। यदि कोई भी छात्र अनुशासनहीनता करता हुआ पाया गया उसकी शुल्क रियायत रद्द कर दी जाएगी और विशेष परिस्थिति में नाम काट दिया

20. शिशु कक्षा को छोड़कर अन्य सभी कक्षाओं में प्रवेश स्थान रिक्त होने पर साक्षात्कार के बाद ही दिया लाएगा।

21. विद्यालय में 01 फरवरी से 11 फरवरी तक प्रवेश ले सकते हैं 12 फरवरी से शिशु से कक्षाएं प्रारम्भ हो जाएगी।

22. पाठ्यक्रम के अतिरिक्त विद्या भारती द्वारा निर्धारित संस्कृत, संगीत, नैतिक शिक्षा तथा योग व शारीरिक शिक्षा अनिवार्य है।

आदर्श विद्यार्थी के गुणः

1सुबह सवेरे जगता व जगकर प्रातः स्मरण करता है।

2 माता-पिता एवं बड़ो को प्रणाम कर आशीर्वाद प्राप्त करता है।

3 प्रतिदिन स्नान करके अपने ईष्टदेव की पूजा करता है।

4 घर के कार्य में बालक सहयोग करता है।

5चोरी नहीं करता है।

6 झूठ नहीं बोलता है।

7 जिद नहीं करता है।

8 अपनी किताबों को साफ रखता है।

9नियमित गृहकार्य पूरा करता है एवं स्वाध्याय करता है।

10अच्छे मित्रों के साथ खेलता है।

11अच्छे गीत याद करके बोलता है।

12भोजन करने से पूर्व भोजन मंत्र बोलता है व जूठन नहीं छोड़ता है।

13यह उतना ही पानी लेता है जितनी उसको आवश्यकता पड़ती

14रात्रि को सोने से पूर्व गायत्री मंत्र जाप करके अच्छे विचार मन में लेकर सोता है।

15गरीब बेसहारा जरूरत मंद एवं अभाव ग्रस्त लोगों की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहता है।

NAME	QUALIFICATION	DESIGNATION
DEEPAK THAKUR	B.ED MA	PRINCIPAL
MEENAKSHI THAKUR	M.SC B.ED	T.G.T MEDICAL
SUSHHMA THAKUR	M.SC B.ED	T.G.T MEDICAL
SUBHASH THAKUR	B.Sc. B.ED	T.G.T NON MEDICAL
PRAKASH THAKUR	B.Sc. B.ED	T.G.T NON MEDICAL
RAJENDER THAKUR	M.A B.ED	T.G.T ARTS
SUMAN RANI	B.A B.ED	T.G.T ARTS
ANITA THAKUR	M.A B.ED	L.T (HINDI)
GUDDU RAM	B.A SHASTRI	SHASTRI
INDU THAKUR	P.T.I	P.E.T
RANJNA THAKUR	B.Sc. B.ED	T.G.T NON MEDICAL
BHUPENDER SHARMA	M.A B.ED	T.G.T ARTS
PRAMOD KUMAR	M.C.A	I.T TEACHER
NAVAL KISHOR	P.G.D.C.A	ASSISTANT CLERK
SUMITA ANAND	M.A.B.ED	T.G.T ARTS

LEELA	D.EL.ED	NURSERY TEACHER
SATYA KATOCH	D.EL.ED	NURSERY TEACHER
ANUPAMA SHARMA	D.EL.ED	NURSERY TEACHER
ANITA DEVI	D.EL.ED	NURSERY TEACHER
SOHAN LAL	D.EL.ED	P.R.T
NITI		PEON
SANDEEPNA		PEON

सरस्वती विद्या मन्दिर आनी

प्रातः स्मरण
सुबह उठने के बाद इस शलोक का उच्चारण करे
कराग्रे वसते लक्ष्मी करमध्ये सरस्वती ।
करमूले तु गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम

भावार्थ :-हाथ के अग्रभाग मेंलक्ष्मी का वास है, मध्यभाग में सरस्वती का और हाथ के मूल में गोविन्द (भगवान)का वास होता है ।

समुद्र वसने देवि पर्वतस्तनमंडले
विष्णु पत्नि नमस्तुभ्यम पादस्पर्श क्षमस्व मे ।।
भावार्थः समुद्ररूपी वस्त्र धारण करने वाली और सन्तानों के पोषण हेतु जीवनदायिनी नदियों रूपी दुग्धधाराओं को जन्म देने वाले पर्वतों वाली के दिल भूमाता, आपके उपर पैर रखने के लिए मुझे क्षमा करो।

भोजनमंत्र

ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना।।
ॐ सह नाववतु।सह नौ भुनक्तु।सह वीर्यं करवावहै।तेजस्विनावधीतमस्तु।मा विद्विषावहै॥
ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:॥

गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गादेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात ।।

भावार्थः उस प्राण स्वरूप दुख नाशक सुखस्वरूप श्रेष्ठ तेजस्वी पापनाशक देवस्वरूप परमात्मा को हम अनाआंत्या से पारण करें यह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करे।

विवरणिका में दिये गये नियमों अवकाश, परीक्षा परिणाम व पाठ्यक्रम में शिक्षा विभाग, शिक्षा बोर्ड एवं हिमाचल शिक्षा समिति के निर्देशानुसार कभी भी परिवर्तन किया जा सकता है।

विद्या भारती

अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

हमारा लक्ष्य

इस प्रकार की राष्ट्रीय शिक्षा - प्रणाली का विकास करना है जिसके द्वारा ऐसी युवा पीढ़ी का निर्माण हो सके जो हिन्दुत्वनिष्ठ एवं राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत हो, शारीरिक, प्राणिक,

मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्ण विकसित हो तवा जो जीवन की वर्तमान चुनौतियों का सामना सफलतापूर्वक कर सके और उसका जीवन ग्रामीण, वनवासी

गिरिकन्दराओं एवं झुग्गी-झोंपड़ियों में निवास करने वाले दीन-दुःखी अभावग्रस्त अपने वान्धवों को सामाजिक कुरीतियों, शोषण एवं अन्यास से मुक्त कराकर राष्ट्र जीवन को समरस, सुसम्पन्न एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए समर्पित हो।